

नाम संकीर्तन की धूम

भगवत्प्रेम की वृद्धि के लिये सत्संग, ध्यान स्मरण, कथा-प्रवचन एवं लीलाचिन्तन सभी आवश्यक और उपयोगी हैं, परन्तु नाम-संकीर्तन सभी साधनों का शिरमौर है और सबका निचोड़ है । नाम धुन से सोती चेतना जागती है । विक्षप्त प्राण स्थिर होते हैं । मन के प्रमाद आलस्य, निद्रा आदि तमोगुणी दोष दूर हो जाते हैं । तन्मयता की वृद्धि से मन की घुड़दौड़ मिट जाती है । स्थिरता और पवित्रता की वृद्धि से नाम के द्वारा भगवान् और उनकी लीला की स्मृति होती है । स्मृति से लीला-का प्रादुर्भाव होता है । नाम एक ऐसा चुम्बक है जो जीव को मृत्यु लोक से खींचकर अपने प्रियतम प्रभु के लोक में पहुँचा देता है ।

वृहस्पतिवार को जब कथा-सत्संग आनन्द समुद्र उमड़ उठता तब कुछ समय के बाद भोजन आदि से निवृत्त होकर सब सत्संगी सन्त कोकिलजी के पास जुड़ जाते और एक भक्त आगे आगे और उसके पीछे सब भक्त मिलकर पदगान करते तथा मधुर आनन्द में लोटपोट हो जाते । भावावेश में मग्न होकर उठ खड़ें होते । नाच उठते और वे ही क्यों, उनके रोम-रोम, नस-नस रस की वृद्धि से फूल उठती । ऊँचे स्वर से नाम की ध्वनि बाहरी वातावरण को ही नहीं, लोगों की मनोवृत्तियों पर भी

काबू पा लेती । भेरी और करतालें के शब्द से आकाश गूँज उठता । नाम की उस मधुर ध्वनि में भक्तगण अपने शरीर की सुधबुध खो बैठते । आत्मविस्मृत होकर गिर पड़ते । सेवा में नियुक्त लोग खींचकर उन्हें बाहर लाते, चेतना लाभ कराते । परन्तु सजग होने पर वे फिर पूर्ववत् उत्ताल ताल की तरंगों में बह जाते और उद्दाम नृत्य में मग्न हो जाते । मण्डप से बाहर खड़े मोहमद के प्यारे मुसलमान लोग भी नाम ध्वनि की मधुरता से आकृष्ट होकर नाचने लगते । जिस समय सब लोग नाम-ध्वनि में मग्न हो जाते, मण्डप के ऊपर किरणें छा जाती और एक झिलमिल-झिलमिल प्रकाश होने लगता । इस दिव्य ज्योति को देखकर बाहरी लोग भी आश्चर्यचकित हो जाते । उस समय सन्त कोकिलजी अपने आसन पर ही खड़े होकर अपने चरणकमलों से धीरे-धीरे ताल देने लगते । उनका यह मधुर लास्य देखकर भक्तमण्डली का उत्साह बढ़ जाता और सन्त कोकिलजी की स्थिर और खुली दृष्टि एक दिव्य आनन्द का अनुभव करने लगती थी । जिन लोगों ने देखा है उनकी आँखों के सामने वह बात अब भी ज्यों की त्यों है कि उस समय प्यार साईं के मुखारविन्द पर एक दिव्य ज्योति छिटक जाती मानों हृदय का आनन्द छलककर बाहर आ गया है और भक्तों पर बरसकर उन्हें उन्मत्त बना रहा है ।

सन्त कोकिलजी नाम-जप, कीर्तन, लीला, ध्यान, प्रवचन-के सिवा उपनिषद्, योगवाशिष्ठ आदि वेदान्त ग्रन्थों का भी

स्वाध्याय करते थे । इनमें उनका पूरा प्रवेश था । समय समय पर उन्हें समाधि लग जाती थी और जिज्ञासु जनों को तत्त्वविषयक, श्रवण भी कराते थे । उन्होंने वृहदारण्यक उपनिषद्, पञ्चदशी आदि वेदान्त के ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और लिखवासे । निरोधसमाधि किस प्रकार सिद्ध होती है इसके सम्बन्ध में उन्होंने एक ग्रन्थ भी लिखा है ।

“सी, सीमा शीलादिक गुणा ।

ता, तामरस सादृशी सुणा ॥

निर्मल नाम सत्यं सद् भणा ।

कोटि कल्प कृषि लव लिंग लुणा ॥४४॥

आउ माउ सँची शील सिन्धु अत्यं ।

जयां जाउ तयां ते रहो संग नित्यं ॥

साकेत स्वामिनि ‘वेदवती’ सत्यं ।

विरहिणी अमां विरह ‘श्रीखण्डि’ दित्यं ॥

वह देखो सखी ! गान कला कौशल गगन में देवाँगनाए मेघ राग संगीत गान करती हैं ।

मंगल श्रीहरि ओम् सिय सत्यं । नित्य मंगल सत्गुर वेदवत्यं ॥

मंगल मैथिलि श्रीरघुपत्यं । भरत शत्रुहन लक्ष्मण यत्यं ॥

कौशल्या दशरथ दाम्पत्सं । इहा ‘भूमा श्रीखण्डि’ भणत्यं ॥

मंगल श्रीहरिओम् सीअ सत्यं । मंगल सामसुता वेदवत्यं ॥४५॥

अई वैकुण्ठेश्वरी कमला ! अब मंगल रूप दूध पीकर मेरे उपवर-हण रूप कौमल परम सुन्दर भुजा पर विश्राम करो । फिर उठकर कुमार श्रीजानकीचन्द्र का अवध धाम में कौमार पन्ने के अद्भुत श्रावण कातक फागुण चरित्र श्रवणानन्द दाता मैं सुनाऊँगा ।

“अब मेरा अविचल बोल दृढ़ बाँध”

“श्रीजानकी भक्ति आनन्द मय” “श्रीजानकी भक्ति को नहीं भय”

“श्रीजानकी भक्ति की नहीं क्षय” “श्रीजानकी भक्तिकी सर्वदा जय”